हिन्दी विभाग

5-11-2020

11.45 to 1.20 pm

BA-II IV Paper डॉ गीता कुमारी

विषय - कहानी

राधिकारमण प्रसाद सिंह

राधिकारमण प्रसाद सिंह का जन्म 10 सितम्बर, 1890 को बिहार के सूर्यपुरा, शाहाबाद में संभ्रांत कुल में हुआ था। हिन्दी के मंच पर कहानी लेखक के रूप में 1913 के आसपास आए। उसी साल आपकी एक कहानी कानों में कंगना काशी की इंदु नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। यह अत्यंत राधिकारमण जी की भावुकतापूर्ण और सरस रचना थी और इसने साहित्य - रसिकों का ध्यान आकर्षित किया।

राधिकारमण प्रसाद सिंह कि कहानियों का स्वर प्रायः आदर्शवादी रहा है। हिन्दी के आधुनिक गद्यकारों में आपका प्रमुख स्थान है। इन्होंने कहानी, गद्य-काव्य उपन्यास, संस्मरण, नाटक सभी विधाओं में साहित्य रचना

You will never be a leader
unless you first learn to follow and be led.

Scanned with CamScanner

की इनका संबंध देश के अनेक साहित्यिक सांस्कृतिक और शैक्षणिक संस्थाओं से रहा। इनके दो कहानी संग्रह कुसुमांजलि और गांधी टोपी क्रमश: 1912 और 1938 में प्रकाशित हुए हैं। राधिकारमण प्रसाद सिंह की गणना हिन्दी के यशस्वी कथाकारों एवं विशिष्ट शैलीकारों में होती है। इन्होंने लगभग 50 वर्षों तक हिन्दी की सेवा की है। इन्होंने भावुकता में ही कभी-कभी काव्य पथ का भी अनुसरण किया है। नवजीवन और प्रेमलहरी आपके गद्य का काव्यों का संग्रह जो 1912 में प्रकाशित हुआ। इनके चार उपन्यास उल्लेखनीय हैं, राम रहीम पुरुष और नारी, संस्कार चुंबन और चांटा जिनमें देश की सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों को अंकित करने की चेष्टा की गई है।

इनके पात्र समाज और सभ्यता के विभिन्न वर्गों से लिए गए हैं और अपने-अपने

इन उपन्यासों की भाषा-शैली भी बहुत लोकगम्य और रोचक है। इन्होंने जीवन और समाज के अनेक मनोरम संस्मरणात्मक चित्र भी प्रस्तुत किए हैं जैसे सावनी समाँ, टूटा तारा, सूरदास। इसके साथ इनके दो नाट्य कृतियां भी है — अपना पराया, धर्म की धुरी। इसके अतिरिक्त भी आपकी कुछ अन्य कृतियाँ है नारी क्या एक पहेली, पूरब और पश्चिम हवेली और झोपड़ी, वे और हम, धर्म और मर्म तब और अब, माडर्न कौन, अपनी-अपनी नजर, माया मिली न राम, अबला क्या ऐसी सबला। इन रचनाओं से यह स्पष्ट है कि इन्होंने साहित्य की सभी विधाओं को अंगीकृत किया है। इनकी सफलता का रहस्य इनकी मनोरम शैली है।

हिन्दी के आधुनिक गद्यकारों में विशेष प्रकार की भावुकता प्रधान, काव्यात्मक

Notes

Life's more than a magazine
in which we flip the pages and enjoy the pictures.

Scanned with CamScanner

लच्छेदार तथा मुहावरेदार भाषा शैली के कारण प्रसिद्ध है। तत्सम सामासिक शब्द-योजना तथा तुकपूर्ण पदावली के कारण आपके लेखन में बंगला गद्यशैली की झलक पाई जाती है। सन् 1917 में जब राजेन्द्र प्रसाद सिंह बालिग हुए तब उनकी रियासत डुमरांव इंडिया कंपनी के बनाए कानून 'कोर्ट ऑव वार्ड्स' के बंधन से मुक्त हुई और वे उसके स्वामी हो गए। सन् 1920 के आस-पास अंग्रेज सरकार ने राजेन्द्र प्रसाद सिंह को राजा की उपाधि से विभूषित किया। आगे चलकर सी.आई.ई की उपाधि भी मिली। इनकी गांधीवाद में गहरी आस्था रही। ये आरा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के प्रथम अध्यक्ष मनोनीत हुए। सन् 1927 से 1935 तक उसमें रहकर अनेक सामाजिक एवं प्रशासनिक सुधार किए। गांधीजी के प्रभाव में आकर उन्होंने चेयरमैन पद छोड़ दी और भारत रत्न डॉ राजेन्द्र प्रसाद के आग्रह पर बिहार हरिजन

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
.	.	.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	.	.	.	.	.	.	.	.

सेवक संघ की अध्यक्षता ले ली। सन 1935 में अपनी रियासत का सारा भार अपने अनुज पर सौंप कर उन्होंने साहित्य की आराधना की। 1920 में वे बेतिया में बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पंद्रहवें अधिवेशन के अध्यक्ष मनोनीत हो गए थे। उक्त सम्मेलन के पंद्रहवें अधिवेशन के वे स्वागताध्यक्ष भी थे। वे आरा नागरी प्रचारिणी सभा के सभापति भी हुए। राधिकारमण प्रसाद सिंह का हिन्दी गद्य साहित्य के उत्थान में योगदान निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है।

Notes

We have an infinite amount
to learn both from nature and from each other.